अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

'बजे मृदंग' (हाइकु संग्रह) में संवेदना और शिल्प के नए क्षितिजों की तलाश

डॉ० मोनू सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी)
चौधरी चरण सिंह राजकीय महाविद्यालय, छपरौली (बागपत)
ई–मेल : monusingh5233@gmail.com

'बजे मृदंग' डॉ० देवकीनन्दन शर्मा का सद्यः प्रकाशित हाइकु संग्रह है। इस हाइकु को पाँच खण्ड़ों (वंदन, प्रकृति, पर्व, जिन्दगी और प्रकीर्ण) में विभक्त किया गया है। इन पाँच खण्ड़ों में 300 हाइकु संकलित हैं। हाइकु मूलतः मुक्तक कविता है। संस्कृत साहित्य में मुक्तक की परिभाषा इस प्रकार दी गई है– **'पूर्वापर प्रसंग रस निरपेक्षापि रस चवण क्रियैव तदैव मुक्तक'**। यानी मुक्तक कविता अर्थ की दृष्टि से अपने पूर्व और पर प्रसंग से निरपेक्ष रहते हुए रस का आस्वादन कराती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने मुक्तक को परिभाषित करते हुए लिखा है– प्रबन्ध काव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक काव्य एक चुना हुआ गुलदस्ता। आचार्य शुक्ल एक सफल मुक्तकार के लिए भाषा की समास शक्ति और कल्पना की समाहार शक्ति पर भी बल देते हैं। ये सभी शर्ते एक उत्कृष्ट हाइकुकार के लिए नितांत अपरिहार्य हैं।

डॉ० देवकीनन्दन शर्मा ने 'बजे मृदंग' हाइकु संग्रह में 300 हाइकुओं को चुनकर एक मनोरम गुलदस्ता तैयार किया है, जो अपनी गहन संवेदना, भावबोध सामयिक सन्दर्भों एवं सुगठित शिल्प के कारण ध्यान आकृष्ट करता है। हाइकु की मूल शक्ति उसकी व्यंग्यार्थ क्षमता में निहित होती है। हाइकु कविता मूलतः बिम्बात्मकता, प्रतीकात्मकता या चित्रात्मकता प्रधान होती है। 'बजे मृदंग' के शीर्षक में गहन व्यंजनात्मकता और प्रतीकात्मकता निहित है, जो संग्रह में संकलित हाइकुओं के मर्म को उद्घाटित करती है। संग्रह में संकलित हाइकुओं को पढ़ते हुए बार–बार मृदंग का मधुर निनाद ध्वनित होता है। मृदंग में गहन व्यंजना विन्यस्त है। मृदंग का इतिहास लगभग दो हजार वर्ष पुराना है। यह ढोलक और तबले का पूर्वज भी है। मृदंग का ही छोटा रूप तबला और ढोलक है। पौराणिक मान्यता के अनुसार जब भगवान शिव ने ताण्डव नृत्य किया, तब नन्दी ने मृदंग बजाया। मृदंग अपने प्रारम्भिक काल में मिट्टी से बनता था, कालान्तर में इसकी संरचना में परिवर्तन होता चला गया। शीर्षक के अनुरूप ही इस हाइकु संग्रह के अधिकांश संग्रहों का सम्बन्ध मृदा यानी मिट्टी अर्थात् लोक से घनिष्ठ रूप से जुड़ा है। दूसरा मृदंग का सम्बन्ध भगवान शिव से जुड़ा होने के कारण आस्था से भी है। संग्रह का पहला ही खण्ड 'वन्दन' कवि की ईश्वर में गहरी आस्था का द्योतक है। गणपति, शिव, जगदम्बा, राम, कृष्ण और राधा की वंदना को 51 हाइकु समर्पित हैं। इन हाइकुओं में भारतीय संस्कृति के विविध रूप, ईश्वर के प्रति अटूट आस्था, जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और मानवीयता का स्वर प्रमुख रूप से रूपायित हुआ।

सुप्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह ने हाइकु के विषय में कहा था– **''हाइकु केवल एक छन्द, एक काव्य नहीं, बल्कि पूरी संस्कृति है।''**

[1] इस हाइकु संग्रह में भारतीय संस्कृति के विविध त्यौहार, होली, दीपावली, रक्षाबंधन, करवा–चौथ विभिन्न ऋतुएँ शीत, ग्रीष्म, बसन्त, हेमन्त, वर्षा आदि की मनोरम छठाएँ अपने पूरे वैभव और उल्लास के साथ चित्रित हुए हैं। हाइकु कविता का सम्बन्ध आध्यात्मिकता से बहुत गहरा है, इसका सम्बन्ध जैन दर्शन से भी है। डॉ० शर्मा के हाइकु संग्रह का आरम्भ भक्ति या आध्यात्मिकता से ही होता है। 50 से अधिक हाइकुओं में कवि ईश्वर के प्रति अपने भाव रूपी नैवैद्य को अर्पित करता है–

''करुं वंदन/हे रिद्धि सिद्धिदाता/गौरी नंदन
करो पावन/हे गजानन देवा/मन आंगन
फैले उजास/पूरी करो माँ अम्बे/जन की आस
मिटे पाखण्ड/माँ भरो जन मन/ज्योति अखण्ड
चले ठुमक/माँ कौशल्या के राम/मन कुहुक
वसुधा गावै/विराजेंगे श्रीराम/गगन नाचै।''[2]

ये हाइकु एक ओर तो भारतीय काव्य की मंगलाचरण की परंपरा का निर्वहन करते हैं, दूसरी ओर कवि के निर्मल, निष्कलुष, पवित्र भक्ति भाव की सुन्दर अभिव्यक्ति करते हैं। कवि गौरी नंदन से अपनी मनोकामना पूर्ण करने की प्रार्थना करता है, तो वहीं मन रुपी आंगन को तमाम कलुषताओं, संकीर्णताओं से मुक्त कर पावन करने की मनुहार करता है। तीसरे हाइकु को पढ़ते हुए निराला की प्रसिद्ध कविता **'वर दे वीणावादिनी'** का स्वर पार्श्व से ध्वनित होता है। कवि माँ अम्बे से धरा के समूचे अंधकार को मिटाकर उजास फैलाने की निस्पृह कामना करता है, बिल्कुल निराला की भाँति **''कलुष भेद तम हर प्रकाश भर, जगमग जग कर दें!''** कोई भी कविता तब

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

और भी बड़ी हो जाती है, जब उसे पढ़ते हुए हमारी समूची परंपरा और संस्कृति स्मृति में बार–बार कौंधती रहे। भारतीय संस्कृति के सदियों की सनातन यात्रा का प्रतिफल यहीं तो है– **सर्वे भवन्तु सुखिनः/सर्वे भवन्तु निरामया/सर्वे भवन्तु पश्यन्ति . . .**

हमारे वेदों, उपनिषदों का सम्पूर्ण रस, ज्ञान और निस्पृह कामना मानों इन हाइकुओं में निचुड़ कर आ गए हों। डॉ० शर्मा का कोमल मन केवल आदर्श में या कल्पना–कानन में ही विचरण नहीं करता अपितु यथार्थ की खुरदुरी भूमि पर आकर सच से भी टकराता है। कवि इस सत्य से भली–भाँति विज्ञ हैं कि वर्तमान समय में भक्ति के नाम पर पाखण्ड भी अपने पूरे चरम पर है, इसलिए कवि यह कहने से नहीं चूकता कि भक्ति के नाम पर नानाविध पाखण्ड खत्म होकर समूचे जन के मन को अखण्ड प्रकाश से जगमग कर दे। राम भारतीय संस्कृति एवं जन–मन की आस्था के आधार हैं। भारतीय साहित्य की ऐसी कोई भाषा–बोली नहीं, जिसमें 'राम' का चरित्रांकन न हो। राम के बाल जीवन को आधार बनाकर कितना सुन्दर और सुगठित हाइकु कवि ने रचा है। शिशु राम जब अपने नन्हें–नन्हें पद धरा पर ठुमक–ठुमक कर रख रहे हैं तो किसका मन कोयल की तरह नहीं कूकेगा? हाइकु कविता केवल 5–7–5 का शब्द कौतुक नहीं है, न ही इन वर्णों की संगति बिठा देना से एक अच्छा हाइकु बनता है, वरन् 5–7–5 उसे शिल्पगत आकार और पहचान तो देता है किन्तु जब तक उसमें एक अच्छी कविता और कवित्व ना पैदा हो, तो वह निरा चमत्कार बनकर रह जाता है। डॉ० कमलेश भट्ट कमल ने इस बाबत बहुत सटीक टिप्पणी की है– **''यदि संक्षिप्त कलेवर में कविता नहीं होगी तो हाइकु होकर भी वह हाइकु नहीं बन पाएगा और अकारथ चला जाएगा। हाइकु परिमाण की नहीं गुणवत्ता की कविता है और कविता लिखी नहीं अपितु रची जाती है।''**[3]

डॉ० शर्मा के हाइकुओं को पढ़ते हुए पाठक अच्छी और सच्ची कविता का रसास्वादन करते हैं। एक अच्छे हाइकु की यह विशेषता होती है कि वह सायास गढ़ा हुआ ना लगे, अपितु निर्झर सोते की भाँति बहता हुए लगे, जैसे हवा बहती है, जीवन बहता है। अच्छे हाइकु में नैसर्गिक सौन्दर्य, सरलता, निश्छलता बची रहनी चाहिए। संग्रह में संकलित हाइकु इसी की बानगी हैं। डॉ० शर्मा का मन प्रकृति एवं लोक में बहुत रमता है। लोक उनकी कविताओं का प्राण है, तो प्रकृति उसका शरीर। डॉ० सत्यभूषण वर्मा ने इस संबंध में लिखा भी है– **''हाइकु जीवन और प्रकृति के कार्य व्यापारों की भावात्मक अभिव्यक्ति की कविता है।''**[4] इस संग्रह में 'प्रकृति' नामक खण्ड के अन्तर्गत (वसंत, फागुन, गर्मी, सावन और पर्यावरण) भारतीय संस्कृति और विशेष रूप से लोक संस्कृति एवं ऋतुओं का मनोहारी चित्रण किया है।

वसन्त ऋतु का आगमन प्रकृति को अन्तः एक बाह्य रूप से स्फूर्ति, नवीनता, उल्लास एवं उमंग से भर देता है। यह प्रकृति के पुनर्नवा होने की ऋतु है। कुछ हाइकु इस सन्दर्भ में देखिए–

''आया वसन्त/इतराया मौसम/बहके सन्त
मौजी वसंत/सुना रहा गजल/झूमा दिगन्त
बोलते फूल/द्वार खड़ा वसन्त/मुस्काते कूल
रंग रसियां/निगोड़ा फागुन/मन बसिया
उड़े गुलाल/हुलसें ऋतुराज/मचे धमाल
रंगीला फाग/रंगे तन–मन में/लगावै आग
करै शृंगार/वसुधा का सावन/परै फुहार
भीगी भोर/रिमझिम सावन/नाचैं मोर
झूमै बदरी/अलमस्त सावन/गावै कजरी।''[5]

इन हाइकुओं में प्रकृति और लोक एकमेव हो जाते हैं। लोक के साथ कवि का बहुत गहरा और आत्मीय रिश्ता है। इन हाइकुओं को पढ़ते हुए हमें अपनी हजारों वर्षों की समृद्ध वसन्तोत्सव एवं लोकोत्सव की परंपराएँ एवं साहित्य के विविध सन्दर्भ पृष्ठभूमि में स्मृत होते रहते हैं। कविता की यही शक्ति है कि वह अपनी जातीय स्मृतियों का भी पुनर्सृजन करती चलती है। इन हाइकुओं को पढ़कर यह नहीं समझना चाहिए कि हाइकु मात्र प्रकृति काव्य या ऋतु काव्य है बल्कि प्रकृति के माध्यम से जीवन को अभिव्यक्त करने की कविता है। प्रकृति साध्य नहीं साधन है। वसंत के आगमन पर क्या जड़ क्या चेतन सभी खुमारी में आकण्ठ डूब जाते हैं, मौसम अपने भाग्य पर इठला उठता है, ऐसी मनोरम और दिव्य ऋतु में मनुष्य तो क्या, सन्तों का मन भी बहक जाता है। वसंतागमन पर समूचा दिग–दिगन्त झूमने लगता है। फागुन का महीना भारतीय समाज और संस्कृति में कितनी उमंग, उल्लास, आनन्द लेकर आता है। मानव अपने जीवन की सभी दुष्चिंताएँ विस्मृत कर निगोड़े फागुन की मस्ती में डूब जाता है।

ये हाइकु भौतिकता और यांत्रिकता की चकाचौंध में डूबी, सौन्दर्य के नाम पर कृत्रिम छवियों में कुंठित और बोरडम का शिकार हुई पीढ़ी को प्रकृति के सहज, स्वाभाविक, नैसर्गिक सौन्दर्य एवं भारतीय संस्कृति के लोक रंग में, लोक उत्सव में शरीक होने का निमन्त्रण देता है, निर्मल मनुहार करता है। यह हाइकु संग्रह

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

अतिभौतिकतावादी संस्कृति एवं उपभोक्तावादी दर्शन का अनायास प्रतिरोध रचता है। सावन को लेकर मन को रंजित करने वाले एक से एक उत्कृष्ट हाइकु इस संग्रह में संकलित हैं। इन हाइकुओं में कवित्व भी पूरे उन्वान पर दिखाई पड़ता है। सावन के साथ लोक के विविध पक्ष, मनोरम और जादुई प्रभाव डालते हैं। इन हाइकुओं में पर्यावरण का उत्सव भी है, तो पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन की चिंताएँ भी हैं–

''मन मोहन/दो यह वरदान/थमे दोहन।''[6]

मनुष्य ने अपने स्वार्थ और लालच के चलते प्रकृति का मनमाना दोहन किया है। समूची धरा मरुभूमि में तब्दील होती जा रही है और मनुष्य नरपशु बनकर सर्वभक्षी बन बैठा है, इसीलिए कवि मन मोहन से यह करुण पुकार कर रहा है कि दोहन की निर्मम प्रक्रिया रुकनी चाहिए। हाइकु संग्रह के तीसरे खण्ड में भारतीय संस्कृति के अटूट अंग त्यौहारों (शरद पूर्णिमा, करवा–चौथ, दीवाली, होली, नववर्ष, प्राण प्रतिष्ठा) से संबंधित अनेकानेक हाइकु संकलित है। भारतवर्ष त्यौहारों का देश है। ये पर्व जन–मन के जीवन में उत्साह, उल्लास, उमंग–तरंग, आत्मीयता और ऊर्जा का नवीन संचार करते हैं। शरद पूर्णिमा का भारतीय समाज में विशेष महत्व है–

''जीवन सुधा/निचोड़ रहा चाँद/भीगी वसुधा।''[7]

शरद का चाँद जीवन रुपी अमृत को निचोड़कर समूची वसुधा को भिगो रहा है। शरद पूर्णिमा का कितना मनोरम चित्र इस हाइकु में चित्रित हुआ है। हाइकु के विषय में जापानी कवयित्री एमिको मियाशिता बताती हैं– **''हाइकु बाहरी बिम्बों के माध्यम से कवि के अभ्यांतर, उसकी आन्तरिक संवेदना का विस्तार है।''[8]** इन हाइकुओं में भी बाह्य बिम्बों के माध्यम से हम कवि की आन्तरिक संवेदना और कल्पनाशीलता का विस्तार देखते हैं। डॉ० शर्मा को शब्दों की आत्मा का भली–भाँति ज्ञान है, वे शब्दों को शोधते हैं, तराशते हैं, फिर उन्हें भाव और विषय के अनुरूप हाइकु में प्रयुक्त करते हैं। लोक के साथ उनका गहन तादात्म्य है, जिसकी बानगी उनके हाइकुओं में दिखती है। हाइकु में शब्दों को बहुत सूझ–बूझ कर बरतना होता है। एक–एक शब्द पर हाइकु का सम्पूर्ण भाव, अनुभव, संवेदना, सौन्दर्य और शिल्प टिका होता है, इसलिए प्रो० सत्यभूषण वर्मा ने हाइकु सृजन को 'शब्द साधना' कहा है। डॉ० शर्मा शब्द प्रयोग को लेकर बहुत सजग रहते हैं। कहीं उनके यहाँ फागुन 'निगोड़ा' है। 'निगोड़ा' शब्द में जो जादू है, मस्ती है, अल्हड़ता है, लोक का आस्वाद है, चुहल का भाव है, वह किसी दूसरे शब्द में नहीं। कहीं उनके यहाँ बसन्त द्वार पर खड़ा है, तो कहीं ऋतुराज हुलस रहे हैं, तो कहीं कूल मुस्करा रहे हैं, कहीं मौसम स्वयं पर ही इतरा रहा है। प्रकृति का अद्भुत मानवीकरण हमें इन हाइकुओं में देखने को मिलता है। दीपावली का सुन्दर चित्रण देखिए–

''ड्यौढ़ी सजाली/स्वच्छ घर आंगन/आई दीवाली।''[9]

ड्यौढ़ी शब्द में कैसी लोक व्यंजना विन्यस्त है। होली, दीवाली के अनेक चित्रों को, रंगों को, मनुष्य की उत्फुलता को ये हाइकु समाविष्ट किए हुए हैं। होली पर मृदंग बज रहा है, उसके मधुर निनाद से चहुँ दिशाएँ गूंज रही हैं, रंगों और मस्ती में सराबोर हुरियार नाच रहे हैं, मदमत्त हो रहे हैं, इस अनूठे आनन्द और दृश्य को देखकर देवता भी चकित हैं–

''बजै मृदंग/नाचैं हैं हुरियार/देवता दंग।''[10]

यहाँ मृदंग और हुरियार शब्दों ने जो जादू की सृष्टि की है, वह अप्रतिम है। हाइकु को पढ़ते हुए लगता है जैसे पार्श्व में कहीं मृदंग बज रहा हो और हम सब हुरियार बनकर इस जादुई उत्सव में शरीक हो गए हों। हाइकु के चतुर्थ खण्ड **'जिन्दगी'** में संकलित हाइकु जीवन के खट्टे–मीठे अनुभवों, नानाविद्य विसंगतियों, विद्रूपताओं और विडम्बनाओं से हमारा साक्षात्कार कराते हैं। डॉ० शर्मा ने दैनिक जीवन में अनुभूत सत्य को हाइकु का विषय बनाया है। इन हाइकुओं में कोमल नेह–नातों के टूटने की गहन पीड़ा भी है तो जिन्दगी में बढ़ते फरेब और छद्म का दंश भी है–

''मित्र थे नेक/बिछड़े धीरे–धीरे/शत्रु अनेक
घृणा की रीत/फैलाती विष बेल/कैसे हो प्रीत
कोमल तन/बिखरे नाते रिश्ते/कठोर मन
मुँह चिढ़ाती/है फरेबी जिन्दगी/छदम पढ़ाती
टूटे घोंसले/जिन्दगी घमासान/हारे हौसलें।''[11]

वर्तमान जीवन भौतिकता, यांत्रिकता, उपभोक्तावाद, गलाकाट प्रतिस्पर्धा और फरेब से चहुँ ओर से आक्रान्त है। कवि इन सभी स्थितियों के कारण उत्पन्न विसंगतियों और विद्रूपताओं पर पर्दा नहीं डालता वरन् इस सभ्यता की समीक्षा करता है। मित्रों के धीरे–धीरे बिछड़ने की पीड़ा, गलाकाट प्रतिस्पर्धा और स्वार्थपरता के कारण शत्रुओं से स्वयं को घिरा होने की मार्मिक पीड़ा से साक्षात्कार कराता है। यह वर्तमान समय का कटु सत्य है। इस यांत्रिक सभ्यता ने मनुष्य से मनुष्यता का हरण कर लिया है। आज वह इसी जीवन समर में स्वयं को नितांत अकेला, निरूपाय एवं असहाय पाता है। नेह–नातों से उष्मीयता और आत्मीयता का सिरा छूट गया है। प्रीत की रीत के देश में घृणा प्रीत बन गई हो, तो फिर कवि कैसे प्रीत का गीत गाए। जीवन में चहुँ ओर झूठ, छल–छद्म, पाखण्ड

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

का साम्राज्य नजर आता है। ये हाइकु विराट बिम्ब की सृष्टि करते हैं। प्रसिद्ध जापानी हाइकुकार मात्सुओं बासों ने इस बाबत बड़ी माकूल टिप्पणी की है– **''हाइकु दैनिक जीवन में अनुभूत सत्य की अभिव्यक्ति है, पर वह सत्य, एक विराट सत्य का अंग होना चाहिए। हाइकु सम्पूर्ण कविता नहीं है, वह विराट सत्य की ओर इंगित करने वाली सांकेतिक अभिव्यक्ति है।''**[12]

विराट सत्य केवल दार्शनिक ही नहीं होता वरन् जीवन की विसंगतियों विद्रूपताओं और विडम्बनाओं से भी पैदा होता है। विडम्बना के मूल में ही सत्य है। डॉ० शर्मा के हाइकु इसी विराट सत्य की ओर संकेत करते हैं। धर्म जब धंधा बनकर मनुज को अंधा कर दें, तब विडम्बना का जन्म होता है–

''धरम धंधा/हुआ बना रहा है/सबको अन्धा।''[13]

जब जीवन का एकमात्र लक्ष्य स्वार्थ बन जाए तब विडम्बना पैदा होती है–

''एक ही रीत/जिससे मतलब/उसी से प्रीत
मन में बैर/मन्दिर औ मस्जिद/व्यर्थ है सैर।''[14]

इस हाइकु में हमारे समय की कितनी बड़ी विडम्बना विन्यस्त है। देश में मन्दिर और मस्जिदों की संख्या में आए दिन वृद्धि दर्ज हो रही है किन्तु धार्मिक उन्माद दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है, ऐसे में मन्दिर और मस्जिद की सैर निरर्थक है। कविता अपने समय का आईना भी होती है और इतिहास भी। वर्तमान परिदृश्य को देखें तो लगता है कि हमारे समय और समाज में धार्मिक क्रान्ति हो गई हो, जहाँ देखो, धार्मिक आयोजन, ऐसा अनुभव होता है कि प्रत्येक व्यक्ति धार्मिक हो गया हो, तब प्रेम, करूणा, बंधुत्व, सत्य, भ्रातृत्व भाव में समाज को आकण्ठ डूब जाना चाहिए, किन्तु वास्तविकता इसके सर्वथा प्रतिकूल है। समाज में वैमनस्य यथावत है, सद्भाव छिन्न–भिन्न है। हाइकु आकार में भले ही लघु हो किन्तु अर्थ में बहुत गहरी और विस्तृत अर्थ की कविता है। एक हाइकु इस संबंध में देखिए–

''अब डाकिए/नहीं लाते चिट्ठियाँ/बढ़े हाशिए।''[15]

वर्तमान समय यूँ तो डिजिटल समय है। सूचनाओं के अनेकानेक त्वरित माध्यम हमें घेरे हैं। सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों पर हमारे मित्रों की सूची हजारों में है। हमें अनुकरण करने वाले लाखों में हैं, किन्तु ये सभी संबंध आभासी दुनिया के कृत्रिम संबंध है। इस संबंधों में आत्मीयता, ऊष्मा, ईमानदारी, विश्वास और प्रेम नहीं है। हम भीड़ में भी स्वयं को नितान्त अकेले और तन्हा पाते हैं, अन्दर से बिल्कुल रीते। सम्बन्धों में हाशिए दिनों–दिन बढ़ते ही जा रहे हैं। इस डिजिटल क्रान्ति से कहीं अच्छा और सच्चा तो हमारा डाकिए ही था, जो हमें नेह की डोर में बाँधे था, किन्तु विडम्बना यह है कि डिजिटल क्रान्ति ने डाकिए संस्कृति को निगल लिया और इस क्रान्ति का भयावह रूप हम सभी के सम्मुख है। एक हाइकु में डिजिटल क्रान्ति की इससे अच्छी समीक्षा नहीं हो सकती। संग्रह के अन्तिम खण्ड प्रकीर्ण में माँ मातृभाषा, नारी, बेटी, बच्चे, क्रिकेट, कोरोना और राजनीति पर अनेक सामयिक सन्दर्भों को समेटे हुए उत्कृष्ट हाइकु संकलित है। माँ के समर्पण और त्याग को समर्पित एक हाइकु देखिए–

''दीप सी जले/तिल–तिल सुलगे/अम्मा न बुझे
माँ की ममता/जमीं पर जन्नत/न है समता।''[16]

हिंदी का विकास केवल बधाई संदेश देने से सम्भव नहीं है, उसके विकास के लिए ठोस, व्यावहारिक, संगठित और रचनात्मक प्रयास करने होंगे–

''मात्र बधाई/नहीं करेगी हिंदी/तेरी भलाई।''[17]

यह हाइकु हिंदी समाज की उदासीनता एवं अकर्मण्यता पर तीखा व्यंग्य है। नारी केवल देह नहीं है, उसके सौन्दर्य को समग्रता में समझने का निर्मल आग्रह कवि करता है–

''न सिर्फ हूर/समझे नारियाँ हैं/सृष्टि का नूर।''[18]

वर्तमान राजनीति का विद्रूप चेहरा भी इन हाइकुओं का वर्ण्य–विषय बना है–

''बेतुके बोल/झूठ बल प्रपंच/झोल ही झोल
ये पहरूए/राजनीति के गुरु/बहुरुपिए।''[19]

डॉ० शर्मा का हाइकु संग्रह 'बजे मृदंग' अपनी संवेदना और शिल्प में नवीनता, मौलिकता और रचनात्मकता के नए क्षितिजों का आगाज करता है। ये हाइकु ताजे हवा के झोंके की मानिंद पाठकों की चेतना का विस्तार करते हैं और इस जटिल समय को कई कोणों से सूझने–बूझने की सार्थक कोशिश करते हैं। हिंदी जगत में इस हाइकु संग्रह का स्वागत होना चाहिए।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

सन्दर्भ

1. डॉ० जगदीश व्योम (सं०) 'हिन्दी हाइकु कोश', कमलेश भट्ट कमल द्वारा लिखित भूमिका 'हिन्दी हाइकु कविता का व्योम', पृ०सं० 18
2. डॉ० देवकीनन्दन शर्मा, बजे मृदंग (हाइकु संग्रह), पृ०सं० 29, 30, 35, 37, 38
3. डॉ० जगदीश व्योम (सं०) 'हिन्दी हाइकु कोश', कमलेश भट्ट कमल द्वारा लिखित भूमिका 'हिन्दी हाइकु कविता का व्योम', पृ०सं० 20
4. वही, पृ०सं० 25
5. डॉ० देवकीनन्दन शर्मा, बजे मृदंग (हाइकु संग्रह), पृ०सं० 45, 47, 48, 49, 54
6. वही, पृ०सं० 59
7. वही, पृ०सं० 63
8. डॉ० जगदीश व्योम (सं०), कमलेश भट्ट कमल द्वारा लिखित भूमिका 'हिन्दी हाइकु कविता का व्योम', पृ०सं० 18
9. डॉ० देवकीनन्दन शर्मा, बजे मृदंग (हाइकु संग्रह), पृ०सं० 67
10. वही, पृ०सं० 72
11. वही, पृ०सं० 79, 80, 81
12. सत्यभूषण वर्मा, हाइकु–2021, भूमिका से उद्धृत
13. डॉ० देवकीनन्दन शर्मा, बजे मृदंग (हाइकु संग्रह), पृ०सं० 83
14. वही, पृ०सं० 83, 88
15. वही, पृ०सं० 89
16. वही, पृ०सं० 97, 98
17. वही, पृ०सं० 100
18. वही, पृ०सं० 101
19. वही, पृ०सं० 118